प्राथमिक चिकित्सा उद्देश्य एवं उपचार

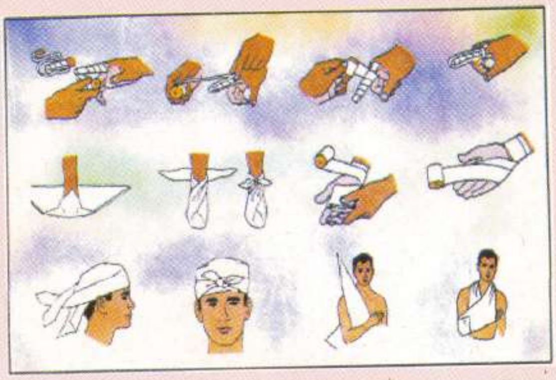

उत्तर प्रदेश सरकार – राज्य आपदा प्रबंधन विभाग, उ॰ प्र॰

प्राथमिक चिकित्सा

दुर्घटना में घायल अथवा आकस्मिक रूप से बीमार व्यक्ति को डॉक्टर अथवा एम्बुलेन्स के पहुंचने से पूर्व किया जाने वाला प्रारम्भिक उपचार, प्राथमिक चिकित्सा कहलाता है।

प्राथमिक चिकित्सा का उद्देश्य

किसी व्यक्ति को प्राथमिक चिकित्सा निम्न कारणों से दी जाती है–

- ❑ जीवन रक्षा हेतु
- ❑ उसकी दशा और ज्यादा बिगड़ने से बचाने हेतु
- ❑ शीघ्र उपचार हेतु

प्राथमिक चिकित्सा कौन कर सकता है

- जिसे प्राथमिक चिकित्सा का अच्छा ज्ञान हो
- जिसमें दूसरों की सहायता करने की भावना हो
- जो शीघ्रतापूर्वक कार्य कर सकता हो
- जो तनावयुक्त परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक कार्य कर सकता हो

अत्याधिक उत्साह एवं भावनात्मकता, प्राथमिक चिकित्सा में नुकसान पहुंचा सकते हैं।

प्राथमिक चिकित्सा देने के पूर्व

प्राथमिक उपचार करने के पूर्व निम्न जांच कर लें–

खतरे–

आपको कोई खतरा तो नहीं है
दूसरे को कोई खतरा तो नहीं है
रोगी को कोई खतरा तो नहीं है

प्रतिक्रिया–

रोगी को होश है
रोगी को होश नहीं है

शुद्ध वायु–

चारों ओर से वायु का प्रवेश हो रहा है या नहीं
वायु शुद्ध है या नहीं

श्वास–

रोगी की छाती में हलचल हो रही है या नहीं
रोगी की धड़कन चल रही है या नहीं
क्या आप रोगी की श्वास को अपने गाल पर महसूस कर पा रहे हैं

रक्त–प्रवाह–

रोगी की नाड़ी चल रही है या नहीं
क्या रोगी में जीवन के लक्षण दिख रहे हैं

जल जाने या झुलस जाने पर प्राथमिक चिकित्सा

1 यदि कपड़ों में आग पकड़ ले तो दौड़ें–भागें नहीं, बल्कि किसी दरी या कम्बल में शरीर को तब तक लपेटें जब तक आग बुझ न जाए।

2 यदि कपड़ों में आग पकड़ ले तो जमीन पर लोट लगाएं।

3 यदि त्वचा केवल लाल हो गई है तो उस भाग को ठण्डे पानी में 15 मिनट तक रखें या उस भाग पर पानी से अच्छी तरह भीगा कपड़ा 15 मिनट तक रखें।

4 यदि त्वचा ज्यादा जल गई हो और फफोले पड़ गए हों तो फफोले मत फोड़िये, जल कर चिपके हुए कपड़ों को मत हटाइए और कोई दवा मत लगाइए। जले हिस्से को चिपके हुए कपड़ों सहित दूसरे साफ कपड़े से ढक दें या पट्टी बांध दें।

5 जितना शीघ्र हो सके जले व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने की कोशिश करें।

सांप काटने का प्राथमिक उपचार

1 सांप काटने पर कोमल रबर या साफ कपड़े से घाव के ऊपर का हिस्सा बांधिए। कटे हुए अंग को लटका कर रखें। बंधे हुए कपड़े को हर 15 मिनट बाद एक मिनट के लिए ढीला करके फिर बांधें।

2 घाव का निरीक्षण करिए। यदि विषदंत के निशान नहीं हैं तो सांप विषैला नहीं है। यदि निशान हैं तो तुरन्त अस्पताल ले जाकर एण्टी–वेनम सिरम इंजेक्शन लगवाएं।

3 यदि व्यक्ति को अस्पताल ले जाना संभव नहीं है तो घाव को एंटीसेप्टिक या पोटैशियम परमैंगनेट

से धुलिए। चाकू या ब्लेड को गरम करके निर्जर्मित करें और घाव पर लगभग आधा इंच काटिए। यदि रक्तस्राव हो रहा है तो ठीक है, नहीं तो घाव से खून को खींचकर निकालिए। खून के साथ विष भी खिंच आएगा। अब घाव पर दवा या फाहा रखकर पट्टी बांधिए।

बिच्छू काटने का प्राथमिक उपचार

1. जिस स्थान पर डंक लगा हो और वहां तेज दर्द हो रहा हो तो फफोले पड़ सकते हैं तथा पसीना और कंपकंपी हो सकती है। एंटीहिस्टामाइन मरहम, हल्का अमोनिया या सोडियम बाइकार्बोनेट का गाढ़ा घोल घाव पर लगाया जा सकता है।
2. पीड़ा होने पर डॉक्टर घाव पर एनेस्थेटिक इंजेक्शन लगा सकता है।
3. पीड़ित व्यक्ति को दो एस्प्रिन, गरम पेय के साथ दीजिए और उसके शरीर को गरम रखने की कोशिश करिए।

हड्डी टूटने का प्राथमिक उपचार

1. यदि जरूरत न हो तो टूटे अंगों को हिलाएं नहीं।
2. स्प्लिट या खपच्ची का प्रयोग करके टूटे अंग को शरीर से कसकर बांधिए।

3 पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल ले जाने के लिए उचित वाहन तथा मजबूत स्ट्रेचर का प्रयोग करिए।

4 पैर की हड्डी टूटने पर व्यक्ति को कंधे से सहारा देकर उपचार–केन्द्र तक पहुंचाने का प्रयास करें।

आंख में कोई वस्तु गिरने पर प्राथमिक उपचार

1 रोगी को आंख मलने से रोकिए।

2 रोगी की आंख पर पानी के छींटे मारिए।

3 यदि कोई वस्तु आंख में पड़ी दिखाई दे रही हो तो उसे साफ रूमाल या गीली रूई के फाहे से निकालने की कोशिश कीजिए।

4 यदि वस्तु बाहर न निकले तो आंखों पर पट्टी बांधकर डॉक्टर के पास रोगी को ले जाएं।

5 यदि वस्तु पलक के नीचे है तो पलक को बालों से पकड़कर खींचिए व दूसरी पलक तक लाकर छोड़िए। इससे वस्तु अपने आप हट सकती है।

6 आंख को धूल, धुआं व धक्के से बचाकर रखें।

रक्तस्राव का प्राथमिक उपचार

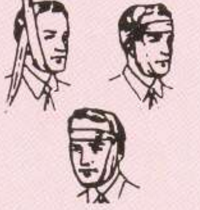

1 सर्वप्रथम रक्तस्राव वाले स्थान को किसी वस्तु के सहारे ऊंचा उठाएं।

2 रक्तस्राव रोकने के लिए पट्टी या पतले रबर का प्रयोग करें।

3 रोगी का शरीर गरम रखने का प्रयास करें।

4 रोगी को शीघ्र अस्पताल पहुंचाने का प्रयास करें।

5 यदि रोगी को रक्तस्राव के कारण बेहोशी आ रही हो तो उसे गरम चाय या दूध आवश्यकतानुसार देना चाहिए।

तेजाब पीने के बाद प्राथमिक उपचार

1 रोगी को उल्टी नहीं कराना चाहिए क्योंकि उल्टी कराने से आमाशय में छेद हो सकता है।

2 रोगी को ढीले वस्त्र पहनाएंगे।

3 रोगी को अधिक मात्रा में दूध, अण्डे की सफेदी, चावल का पानी आदि पीने को दीजिए।

4 रोगी के सूजे गले को गरम्म सेंक देंगे।

शॉक लगने की स्थिति में प्राथमिक उपचार

किसी व्यक्ति को शॉक लगने के लक्षण निम्न हो सकते हैं–

– बहुत धीमा या बहुत तेज नाड़ी चलना

– ठण्डी, नम या चिपचिपी त्वचा
– उनींदापन या बेहोशी
– चेहरा, होंठ या नाखून पीला पड़ना
– मिचली आना या कब्ज होना

क्या करें–

1 रोगी को गरम सतह पर लिटाएं और आराम करने दें।

2 तत्काल एम्बुलेंस बुलाएं।

3 एम्बुलेंस आने तक खून को बहने से रोकने की कोशिश करें।

4 रोगी के पैर लगभग एक फुट ऊपर उठाकर रखें।

5 रोगी के कपड़े ढीले कर दें।

6 प्यास लगने पर रोगी को पानी न दें, सिर्फ उसके होंठों को तर करें।

7 खुली हवा चारों ओर से आने दें।

8 आवश्यकता पड़ने पर रोगी को कृत्रिम सांस देना चाहिए।

एम्बुलेन्स सेवा के लिए फोन करें 102

मुद्रक : प्रेम प्रिंटिंग प्रेस, 257-गोलागंज, लखनऊ-226 018